7.18. न्याय के अनुसार ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण *(Nyaya Arguments for the Existence of God)*

ईश्वर के अस्तित्व के लिए नैयायिकों ने कई युक्तियों का सहारा लिया है। यहाँ कुछ प्रमुख युक्तियाँ इस प्रकार हैं—

(a) कार्य-कारण नियम पर आधृत तर्क (Causal Proof)—कार्य-कारण सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक घटना या कार्य का एक कारण अवश्य होता है (Every event must have a cause)। प्रत्येक वस्तु कई अंशों के संयोग से बनती है। इसलिए सभी मिश्रित या सावयव पदार्थों का कुछ कारण होता है। इन पदार्थों के भौतिक कारण तो परमाणु हैं। इन्हीं परमाणुओं के संयोग से ये पदार्थ बनते हैं। अब प्रश्न है कि परमाणुओं को एकत्र करके इन्हें सजा-सँवारकर पदार्थों के रूप में संगठित करनेवाला कौन है? यह सत्ता अवश्य ही ईश्वर है; क्योंकि उसे परमाणुओं और उनके संगठन का पूर्ण ज्ञान है। यह सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिशाली है। इसलिए, ईश्वर ही विश्व का निमित्तकारण है। यह प्रमाण कार्य-कारण-नियम पर आधृत है। यह विश्व को एक कार्य मानकर इसके कारण के रूप में ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध करता है।

नैयायिकों के इस तर्क से मिलता-जुलता पाश्चात्य दर्शन में भी एक तर्क है, जिसे, 'Causal argument' कहते हैं। इसके समर्थक **पाल जेनेट** (Paul Janet), **लोत्जे** (Lotze) आदि हैं। इन विद्वानों के अनुसार विश्व का कर्ता अवश्य ही एक बुद्धिमान एवं सर्वज्ञ सत्ता है और वह ईश्वर है।

(b) अदृष्ट नियम पर आधृत तर्क (Proof based on the Law of Adrista)—विश्व में अनेक प्राणी सुखी और अनेक प्राणी दुःखी भी हैं। कभी-कभी सज्जन दुःख झेलते नजर आते हैं और दुर्जन सुख भोगते दीख पड़ते हैं। ऐसा क्यों होता है? क्यों कुछ लोग सुख-चैन की वंशी बजाते हैं, तो कुछ लोग दुःख-दर्द की आहें भरते हैं? इन सभी प्रश्नों का समाधान कर्म-सिद्धांत (law of karma) के आधार पर हो सकता है। इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति को अपने किए कर्मों का फल अनिवार्य रूप से भोगना पड़ता है। उसे शुभ कर्मों के लिए सुख एवं अशुभ कर्मों के लिए दुःख झेलना पड़ता है। कुछ कर्मों के फल हमें इसी जीवन में मिल जाते हैं और कुछ कर्मों के फल हमें अगले जीवन में मिलते हैं। सुख-दुःख हमारे अपने कर्मों के फल हैं। अदृष्ट हमारे वर्तमान सुखों एवं दुःखों को उत्पन्न करता है। शुभ या अशुभ कर्मों से उत्पन्न पुण्यों या पापों का समूह ही 'अदृष्ट' कहलाता है। इसी अदृष्ट-नियम के अनुसार व्यक्ति को सुख या दुःख मिलता है। अदृष्ट-नियम अचेतन होने के कारण स्वयंचालित नहीं हो सकता। यह बिना किसी चेतन एवं सर्वज्ञ सत्ता के नियंत्रण के जीवों को उनके कर्मानुसार सुख या दुःख नहीं प्रदान कर सकता। इसलिए, नैयायिकों ने ईश्वर को अदृष्ट-नियम के संचालक के रूप में मानना आवश्यक बताया है। इस प्रकार, ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है। यह प्रमाण नैतिक प्रमाण (moral proof) कहा जाता है।

(c) वेदों की प्रामाणिकता पर आधृत तर्क (Argument based on the Authoritativeness of the Vedas)—न्यायदर्शन आस्तिक दर्शन है। यह वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास रखता है। वेदवाक्य सदैव सत्य होते हैं। प्रश्न है—वेद इतने प्रामाणिक क्यों माने जाते हैं? यदि इन्हें मनुष्य द्वारा रचित माना जाए, तो इनमें पूर्ण प्रामाणिकता नहीं रह सकती। ये निश्चय ही ईश्वरकृत हैं और इसी कारण इन्हें प्रामाणिक माना जाता है। इस प्रकार वेदों की प्रामाणिकता के आधार पर ईश्वर की सत्ता सिद्ध की गई है।

(d) श्रुतियों की आप्तता पर आधृत तर्क (Proof based on the Testimony of Shruti)—श्रुतियाँ सुनी हुई होती हैं। इनमें अनेक स्थलों पर ईश्वर की सत्ता स्वीकार की गई है। वेद देववाणी हैं और वे ईश्वर की सत्ता स्वीकार करते हैं। इसलिए ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है। यह प्रमाण अनुमान या तर्क पर आधृत नहीं है। यह तो एक शब्दज्ञान है।

(e) उदयनाचार्य द्वारा दिए गए ईश्वर के अस्तित्व के लिए तर्क अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। उन्होंने आठ तर्कों के आधार पर ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने का प्रयास किया है। यहाँ उन सबका वर्णन संभव नहीं।

आलोचना—न्याय के ईश्वर-संबंधी प्रमाणों के विरुद्ध निम्नलिखित आक्षेप किए जाते हैं—

Scanned with CamScanner

(a) न्याय के दो प्रमाणों [(क) ईश्वर वेदों की प्रामाणिकता का आधार है और (ख) ईश्वर का अस्तित्व वैदिक कथन पर आधृत है] में अन्योन्याश्रय दोष है।

नैयायिक इस आक्षेप को निराधार बताते हैं। किसी विषय का विचार दो दृष्टिकोणों से होता है—ज्ञान के दृष्टिकोण से और अस्तित्व के दृष्टिकोण से। अस्तित्व के दृष्टिकोण से ईश्वर ही प्रथम है, जिसने वेदों को व्यक्त किया है और प्रामाणिकता प्रदान की है। किंतु, ज्ञान की दृष्टि से वेद ही प्रथम है; क्योंकि इन्हीं के द्वारा हम ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करते हैं। अतः, यहाँ अन्योन्याश्रय दोष नहीं कहा जा सकता।

(b) यदि ईश्वर इस विश्व का रचयिता है, तो वह अवश्य ही शरीरी होगा, क्योंकि बिना शरीर के कोई कार्य नहीं हो सकता। इसका उत्तर न्याय इस प्रकार देता है—यदि ईश्वर का अस्तित्व श्रुति द्वारा सिद्ध है, तो फिर उसपर आक्षेप लाना व्यर्थ है और यदि ईश्वर का अस्तित्व ही असिद्ध है, तो भी इसपर आक्षेप लाना, निरर्थक है। इस प्रकार, ईश्वर के विरुद्ध आक्षेप नहीं किया जा सकता।

(c) कभी-कभी आलोचक यह प्रश्न करते हैं—ईश्वर ने विश्व की रचना क्यों की? विश्व की रचना के पीछे ईश्वर का क्या प्रयोजन (purpose) है? नैयायिक इसका उत्तर यों देते हैं—ईश्वर पूर्ण (perfect) है। उसकी कोई भी इच्छा अतृप्त नहीं कही जा सकती। करुणावश उसने विश्व की सृष्टि की है। सृष्टि में सुख-दुःख का होना स्वाभाविक है। ईश्वर उचित लक्ष्यों की सिद्धि में जीवों की मदद करता है।

Scanned with CamScanner